Vol 2 Issue 5 Feb 2013

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Review Of Research
Vol.2, Issue.5, Feb. 2013
ISSN:-2249-894X
Available online at www.lbp.world

ORIGINAL ARTICLE

वन्य जीव संरक्षण की सम्भावनाएं एवं विकासः राजस्थान के संदर्भ मे एक भौगोलिक अध्ययन

निर्मल कुमार देसाई

प्राध्यापक भूगोल, म. प्र. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चित्तौड़गढ (राज.)

परिचय–

वनों के विनाश के साथ वन्य जीव लुप्त होते जा रहे है। 343 किस्म की मछलियां 50, एम्फीबियन 170 रेप्टाइल, 1355 अकशेरूकियो, 1037 पक्षियों और स्तनधारियों की 497 जातियां विलुप्त होती जा रही है। दक्षिण पूर्व एशिया का प्राचीन वन्य बैल, ओरोनिका नदी का मगर विलोपन तक पहुचं गए। वन्य जीव आर्थिक क्रियाओं के विकास में योगदान देते है। पर्यटन व्यवसाय विकसित होता है । परजीवी एवं प्राणी पारिस्थितिक सन्तुलन बनाये रखने में आवश्यक हैं। वनों एवं वन्य जीवों का संरक्षण अतिआवश्यक है। नेशनल पार्क एवं वन्य जीव अभयारण्य वन्य जीवों के सरंक्षण में सहायता करते हैं। राजस्थान में वनों एवं वन्य जीवों के प्रति प्रेम का सन्देश राज्यवासियों को पूर्वजो से प्राप्त हुआ। विश्नोई जाति के लोग वनों एवं वन्य जीवों से इतना प्रेम करते है कि अपने हरे–भरे खेतों में काले हिरणों को निर्भय होकर विचरण करने देते है। वन्य जीवों की रक्षा में अपने प्राणों की आहुति दे देते हैं। राजस्थान में वन्य जीवों के संरक्षण के लिए राष्ट्रीय उद्यान, अभयारण्य एवं शिकार निर्षिद्ध क्षेत्रों की स्थापना की गई हैं।

अध्ययन क्षेत्र–

राजस्थान के नाम के साथ ही एक प्रतिबिम्ब उभरता है, यहॉ के गौरव मय इतिहास का वीरता एवं शौर्य के साथ गाथाओं का और साथ ही उभरता है। मरूस्थल के विस्तृत बालुका स्तूपों एवं रेत के सागर का दृश्य, अरावली की श्रृखंलाओं का फैलाव तथा चम्बल नदी के बहाव का दृश्य/राजस्थान एक ऐसा प्रदेश है, जहॉ भूगोल और इतिहास एकाकार हो गया है और यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि इस प्रदेश की भौगोलिक परिस्थितियों मे न केवल यहॉ के इतिहास को दिशा दी है अपितु यहॉ के सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश को नियंत्रित एवं निर्धारित किया हैं।

राजस्थान राज्य भारत के उत्तरी पश्चिमी भाग मे 23°30′ से 30°11′ उत्तरी अक्षांश से 69°29′ से 78°17′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित हैं। राजस्थान के उत्तरी और उत्तरी पूर्वी सीमा पंजाब एवं हरियाणा से पूर्वी सीमा उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश से दक्षिणी पूर्वी सीमा, मध्य प्रदेश से दक्षिणी पश्चिमी सीमा मध्य प्रदेश तथा गुजरात से संयुक्त है। राजस्थान का क्षेत्रफल 342,239.74 वर्ग किमी. है जनसंख्या 685.48 लाख में हैं। राजस्थान में 2500 प्रजातियें के पेड़–पौधे, 450 प्रजातियों के पक्षी, 50 प्रजातियों के स्तनपायी, 20 प्रकार के सरीसर्प, 14 प्रजातियों के उभयचर पाये जाते है, कीट पतंगे, तितलियॉ, सूक्ष्म जीव, पादप विशाल मात्रा में मिलते हैं।

राजस्थान के वन्य जीव एवं वन्य पक्षी –

राजस्थान में अनेक प्रकार के वन्य जीव पाये जाते है। बाघ, बघेरा, सांभर, नीलगाय, बिल्ली, चीतल चौसिंगा, गीदड, चिंकारा, जंगली कुत्ता, खरगोश, लोमड़ी, सुअर, खरगोश, बिज्जु , जंगली बिल्ली, नेवला, जनमानुष, उडनगिलहरी सीवेट, लंगुर, भालु, पाटागोह, अजगर, मगर , चुहा, घडियाल, जलकाक, पेंगोलिन, रेटल आदि वन्य जीव पाये जाते है। उल्लु, गिद्ध, चील, कौवे, सर्पपक्षी, जाधिलपालक, धनेश, दर्जिन, नाचन, खजन, चातक, दुधराज, मच्छीगोश, कठफोडवा, शक्कर खोश, फुलचुकी, किलकिला, सीमवाला, मुजगा, हुद–हुद, पतरिंगा, बया, भेलकण्डा, लाल सिरवले तोता, बुलबुल, लज्जर, शाहबाज, सेण्ड ग्राउन, पनडुब्बी, लव्वा, जंगली मुर्गा, सारस, शिकरा, तोता, चम्मचचोंच, टिटहरी, लिलिपर, फाख्ता, मैना, मोर, राबिन, सतकाई, सोरनपर, सुरखाब, लौटसारंग, हिरोन, सतकाई, क्वेल, चमचा, तीतर, बनेर, हरितल, राबिन, महोक, बसन्त गौरी, किरकिरा, चुंगद, गोडावण, लौहसारंग आदि। बगुले, स्टार्क, हेरोन, आईबिल, कारमोटर, स्नेकबर्ड, काटनटिल, डबचिक, स्पाटबिल, हेनहोरिपर, पाईड, घुसर, उकाब, उकाब ।

Title: *वन्य जीव संरक्षण की सम्भावनाएं एवं विकासः राजस्थान के संदर्भ मे एक भौगोलिक अध्ययन*
Source:Review of Research [2249-894X] *निर्मल कुमार देसाई* **yr:2013 vol:2 iss:5**

प्रवासी पक्षियो में शीत प्रवासों हंसो, कल हंसो, मेलाई, मंगवाल, पोचार्ड, टील्स, पिन टेल्स, कूटस आदि। शिकारी पक्षियो में स्टेपी ईगल, व्हाईट ईगल, फिशिंग ईगल, पेराग्रीन फाल्कन, हेरियर स्पेरो हवाक, लार्ज हवाक, स्काप उल्लू सरीसर्प में कोबरा, सांडा, पाटागोह, रसेल , वाईपर, पीवणा, सा स्केल्ड वाइपर, मेडक पाये जाते है।

वन्य जीव संरक्षण हेतु प्रयास–

वन्य जीवो का संरक्षण राजस्थान मे आदिकाल से चला आ रहा है। राजस्थान के विश्नोई जाति हिरण चिंकारा एवं अन्य जीवो संरक्षण हेतु न्यौछावर है। वन्य जीवो के संरक्षण का सर्वप्रथम प्रयास 7 नवम्बर 1955 को हुआ है जब सरिस्का अलवर दरा (कोटा) केवला देवी अभयारण्य (भरतपुर) जयसमन्द(उदयपुर) वन विहार धौलपुर एवं केवला देव घना (भरतपुर) को वन्य जीवों के लिए आरक्षित लैस घोषित किया गया ।

देवी–देवताओं के वाहन –

सिंह–दुर्गा, गधा– शितला माता, मगर– गंगा, हाथी– इन्द्र, हंस– सरस्वती, बाघ– कात्यायिनी, हिरण– वायु उल्लू – लक्ष्मी, गरूड़ – विष्णु, बैल – महादेव मयूर – कार्तिकेय, चूहा – गणेश, कुत्ता– भैरव, भैंसा– यमराज, कौआ – शनिदेव।

राजस्थान के वन्य जीवों की संख्या–

क्रम सं	वन्य जीव	वर्ष 2003–04	वर्ष 2004–05
1	चीता	72	63
2	पेन्थर	680	587
3	चीतल	16338	16442
4	सांभर	15458	11704
5	चिकांरा	24476	51979
6	रोजड़ा	47653	58663
7	जगंली सूअर	10633	9116
8	रीछ	651	832
9	जैकाल	1766	2295
10	जिपना	14218	17620
11	भेडिया	1308	1958
12	लोमडी	5092	7766
13	मगरमच्छ	336	368
14	बन्दर/भालू	31583	48592
15	जंगली बिल्ली	2266	3303
16	गोडावन	85	193
17	वल्चर	10613	2202
	कुल	**23966**	**337302**

राज्य के संरक्षित जीव–

वन्य जीव (सरंक्षण) एक्ट 1972 शिड्युल पुरी तरह सरंक्षित जीव शिकार पूर्णतः वर्जित है । बाघ, बघेरा,/तेन्दुआ, चीता, बिल्ली, मछेरी बिल्ली, रेगिस्तानी बिल्ली,सियागोश, भेड़िया, रेगिस्तानी लोमड़ी, रीछ, उड़न गिलहरी, चिकांरा, कृष्ण मृग, चौसिंगा, मूसक हिरण, चींटीखोश, सूस लगलग, बाज, शाहबाज, शिकरा, मछलीमार, साहिन, बहेती, तुरमती, खटमोर, सफैद सारस, गोडावण(हुकना), तिलोड़, मगई कछुआ, कछुआ, घड़ियाल, पाटाघोह , पीली पाटागोर, जल छिपकली, अजगर आदि । शिड्युल पार्ट 2 कस्तुरी, बिज्जु, लोमडी, लाल लोमडी, गीदड़, जल सर्प, धामण, नाग, नागराज, रसेल, वाईपर।

राजस्थान के संरक्षित क्षेत्र–

क्रम संख्या	नाम उद्यान / अभयारण्य	जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)
1	मरू राष्ट्रीय उद्यान	बाड़मेर एवं जैसलमेर	3162.00
2	ताल छापर	चुरू	7.19
3	केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान	भरतपुर	28.73
4	रणथम्भोर उद्यान	सवाई माधोपुर	392.49
5	सरिस्का अभयारण्य	सिरोही	557.50
6	माउण्ट आबू अभयारण्य	सिरोही	112.98
7	कुम्भलगढ	राजसमन्द	608.57
8	सीतामाता	चित्तौडगढ	422.94
9	फुलवारी की नाला	उदयपुर	492.68
10	जयसमन्द	उदयपुर	52.34
11	टाडगढ रावली अभयारण्य	अजमेर पाली राजसमन्द	463.03
12	राजगढ विषधारी अभयारण्य	बुन्दी	252.79
13	जवाहर सागर	कोटा	153.41
14	भैंसरोड़गढ	चितौडगढ	229.14
15	सवाईमान सिंह अभयारण्य	सवाईमाधोपुर	127.76
16	कैलादेवी अभयारण्य	सवाईमाधोपुर	676.40
17	बन्ध बारेठा अभयारण्य	सवाईमाधोपुर	199.50
18	नाहरगढ	जयपुर	50.00
19	जमवारामगढ	जयपुर	300.00
20	सज्जनगढ	उदयपुर	5.19
21	बस्सी	चितौडगढ	138.69
22	वन विहार	धौनपुर	25.06
23	रामसागर	धौलपुर	34.04
24	केसरबाग	धौलपुर	34.04
25	दरा अभयारण्य	कोटा,झालावाड़	274.41
26	शेरगढ अभयारण्य	बांरा	98.70
27	राष्ट्रीय चम्बल घडियाल अभयारण्य	सवाईमाधोपुर,करौली,धौलपुर	280.00

बाघ संरक्षण परियोजना –

• ***सरिस्का अभयारण्य*** – सरिस्का के वनों का प्रबन्धन बाघ परियोजना के अन्तर्गत किया जा रहा है। बाघ एवं उसके आश्रय स्थल के सरंक्षण के उद्देश्य सें वर्ष 1973 से भारत सरकार की एक योजना आरम्भ की गई उसी योजनाा के अन्तर्गत 1978 से सरिस्का के वनो को 1978 में लिया गया वर्तमान 1866 वर्ग किमी. वन क्षेत्र इस परियोाजना के अन्तर्गत आता हैं। परियोजना क्षेत्र मे बाघ एवं बघेरा प्रजातियों के अलावा जंगली बिल्ली, सिपामोश बिल्ली, सांभर चीतल, रोजडा, चौसिगां, चिंकारा, लक्कडबग्गा, सियार आदि मिलते है । 1995 की वन्य जीव गणना के अनुसार 25 बाघ 46 बघेरा,10 सियागोश, 100 जंगली बिल्ली, 4800 सांभर, 2900 चीतल, 4300 रोजडा, 2600 जगंली सुअर की संख्या आंकी गई थी ।

• ***रणथम्भोर राष्ट्रीय उद्यान***– रणथम्भोर राष्ट्रीय उद्यान सदियों से अपने पशु–पक्षियों के लिए प्रसिद्ध रहा हैं। सवाईमाधोपुर जिले में फैला रणथम्भोर एक शुष्क पतझडों वन्य प्रदेश है जो राजस्थान की अरावली एवं मध्य भारत की विचारधारा पर्वत श्रृखंलाओं के 392 वर्ग कि.मी. क्षैत्र में फैला है। पद्म तालाब,राजबाग तालाब,मलिक तालाब के किनारे सैकड़ो सांभर, चीतल, सुअर, हिरण,नीलगाय विचरण करते हुए मिलेगें ।बांध एवं बघेरा यहां के प्रमुख जीव है इसके अतिरिक्त सियागोश, सियार, जरख, लोमडी, रीछ भी पाये जाते हैं। इस वन में 272 किस्म के पक्षी पाये जाते है । बाज, गरूड़,फलाई, कैचर, तीतर,क्वेल, बगुले, जलकाक, चम्मच चोंच, हिरोन, पनडुब्बी, सींगवाला, मच्छोंखरा उल्लु, पीलक, दुधराज कई ततरह की मुर्गिया आदि पक्षी देखने को मिलेगें ।

• ***केवला देव राष्ट्रीय उद्यान***– राजस्थान के पूर्वी सिंहद्वार भरतपुर जिले में फैला हुआ है । 1956 में पक्षी अभयारण्य के लिए आरक्षित वन रौप बनाया गया एवं 1981 में इसे राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया । 1985 में युनेस्को नने इसे विश्व प्राकृतिक धरोहर को सूची में शामिल किया गया । स्थानीय रूप से निनवास करने वाले पक्षियों के साथ–साथ विभिन्न ऋतुओं में प्रवास करने वाली 390 प्रजाति के पक्षियों को सूचीबद्ध किया गया है।113 प्रजातियों में शीतप्रवासी, 287 प्रजातियों के स्थानीय भारतीय पक्षी तथा 17 प्रजातियों के मानसुनी पक्षी मिला है, 11वर्ग किलोमीटर में फैली झील फैले वृक्षों पर बगुले स्टार्क, हैरोन, आईबिस, कारमोइट, स्नेकबर्ड आादि जातियों के हजारों पक्षी अपने घोंसले बनाते हैं। भरतपुर में मानसूनी प्रजनन पक्षियों का यह जमघट एशिया में सबसे बडी पक्षी प्रजनन स्थली माना जाता है। शीतप्रवासी पक्षियों में हसों,कलहसों, मेलार्ड,मेलवाल, पोचार्ड, टील्स, पिनटेल्स, कुट्स, वेबलर, मेपना, नाइटजार, पार्टरीज, पेनीकन,बीवरबर्ड । शिकारी पक्षियों में स्टेपोइजल, व्हाइट ईगल, फिशीगं इगल, पेराग्रीन फाल्कन, मार्स हेरियर, स्पेरा हवाक, लार्ज हवाक, स्काप उल्लु आदि कर्म तरह की जातियॉ उद्यान मे काले हिरण, चीतल, नीलगाय, सांकर, जंगली सुअर, चोटी खेार, फीजिंग केट, लक्कडबग्गा, जंगली बिलाव, रेटल आदि वन्य जीव तथा अजगर बहुतायत से पाये जाते हैं।

• ***चम्बल जवाहर सागर अभयारण्य*** – घडियालों की सुरक्षा के लिए 1978 में राजस्थान मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश द्वारा संयुक्त अभयारण्य की स्थापना की गई । जवाहर सागर अभयारण्य 100 वर्ग किमी. में फैला है। चम्बल नदी में 93 घड़ियाल है जिसमें 28 बड़े एवं 65 युवा एवं बच्चे है।

चित्र – राजस्थान के संरक्षित क्षेत्र

वन्य जीव सरंक्षण में आने वाले अवरोध –

• वन्य जीवों का अत्यधिक शिकार ।
• वनों का घटता क्षेत्र ।
• वन क्षैत्रों में मानवीय जनसंख्या में वृद्धि ।
• वन क्षैत्रों में गुजरने वाले परिवहन मार्ग ।
• वन एवं वन्य जीवों के प्रति जन चेतना का अभाव ।
• वन क्षैत्रों में पर्यटन सुविधाओं का विकास ।
• वन क्षैत्रों में होने वाला अवैध खनन ।
• वनो की अवैध कटाई ।
• वन्य जीवों के विकास हेतु भोजन एवं पेयजल की सुविधाओं में कमी ।
• वनों एवं वन्य जीवों की रक्षा के लिए कार्मिकों की कमी ।

• रक्षक ही भक्षक की प्रवृति ।

वन्य जीवों के सरंक्षण हेतु प्रयास के सुझाव–

1. राष्ट्रीय उद्यान व वन्य जीव अभयारण्य की स्थापना। राष्ट्रीय उद्यान प्राकृतिक दृश्यों तथा जीवों की सरंक्षण स्थल होते है जबकि वन्य जीव अभयारण्य केवल वन्य जीव प्रजातियों की संरक्षण स्थली होते हैं ।
2 वन्य जीव सरंक्षण अधिनियम 1972–के पालन को सुनिश्चित किया जावे ।
3 वन्य जीवों के शिकार पर नियत्रंण किया जावे ।
4. वन क्षैत्रो में मानवीय हस्तक्षेप में कमी की जावे ।
5. वन क्षैत्रों में गुजरने वाले मार्गो के सहारे दीवार या जाली लगाई जाये ।
6. वन क्षैत्रों में खनन पूर्णतः प्रतिबन्धित किया जावे ।
7. वन्य जीवों के लिए पानी के कुण्ड बनाये जाये ।
8. वनों की रक्षा मे अधिक कार्मिकों को लगाया जावें और उन्हें अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक किया जावें।

राजस्थान मे वन्य जीवों की संख्या (2011) –

वन्य जीव	संख्या	वन्य जीव	संख्या
बाघ	42	सियार	24593
चीता	565	जंगली सुअर	15858
चिंकारा	43908	रोजडा	73428
भालु	821	लोमडी	6609
चीतल	23016	जंगली बिल्ली	3637
सांभर	19835	भेडिया	1238
काला हिरण	13457	लंगुर	69732
लकडबग्गा	3233		
चौसिंघा	327		

वन्य जीवों की कमी होने के प्रमुख कारण –

1.वनों के विस्तार मे निरन्तर कमी अर्थात् वनो न्यूनतम
2.जलवायु परिवर्तन
3.वन भूमि का आवासीय, कृषि अथवा उद्योगो, आदि मे उपयोग से वन्य जीव आवास मे कमी
4.कतिपय बांधो, आप्लावन क्षेत्र मे वन्य जीवों की हानि
5.पर्यावरण अवकर्षण
6.वन्य जीवों का अनधिकृत शिकार
7.निरन्तर अकाल से जल स्त्रोतों के सुखने से अकाल मृत्यु

संदर्भ –

•Ballabh, P. (ed) (2004) 'Land, Community and Governance', Seva Mandir and National Foundation for India, India. Bhise, S.N. (ed) (2004) 'Decolonizing the Commons', Seva Mandir and National Foundation for India, India.
•Saxena, N.C. (1996) 'Forests Under People's Management in Orissa', Social Change, 26(1): 68-83.
• Negi Sharad Singh , Handbook of National Parks, Wildlife Sanctuaries, and Biosphere Reserves in India Indus Publishing, 2002
•Kothari Ashish, Management of national parks and sanctuaries in India Ministry of Environment and Forests, Indian Institute of Public Administration. Environmental Studies Division, Indian Institute of Public Administration, 1989.
•Ministry of Forests and Environment Protected Areas website
•http://en.wikipedia.org/wiki/Category:Wildlife_sanctuaries_in_

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : http://oldror.lbp.world/